अग्निपत्र

देश के नीति-निर्धारको से देश की मुख्य 9 व्यवस्थाओं से जुडे ज्वलन्त प्रश्न

भारत स्वाभिमान की मुख्य 9 नीतियाँ एवं उद्देश्य

1 स्वदेशी चिकित्सा व्यवस्था।
2 स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था।
3 स्वदेशी अर्थव्यवस्था।
4 स्वदेशी कानून व कर व्यवस्था।
5 भारतीय संस्कृति की रक्षा।
6 भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, महंगाई व भूखमुक्त वैभवशाली भारत का निर्माण।
7 ग्रामीण स्वावलम्बन।
8 पर्यावरण की रक्षा व स्वच्छता।
9 नियन्त्रित जनसंख्या।

यदि आपमें स्वदेश का थोडा-सा भी स्वाभिमान है और आपको अपने राष्ट्रीय दायित्वों व कर्त्तव्यों का अहसास है, यदि आपमें देश के प्रति क्रतज्ञता का भाव है, तो हम उन तमाम देश भक्त संवेदनशील, सजग, जागरुक व कर्तव्य निष्ठ भारतीयों से आह्वान करते हैं कि यदि राष्ट्र हित मे उठाये गये ये प्रश्न आपको उचित लगते है तो आप भी इस आन्दोलन मे सक्रिय रुप से सहभागी बनिए और इन भ्रष्ट नीतियों, कानूनो एवं व्यवस्थाओं को उखाड फैंकने व देश को बचाने के लिए आगे आइए और एक सच्चे भारतीय होनें का फर्ज निभाइये और देश की व्यवस्थाएं चलाने वालों से राष्ट्रहित मे ये प्रश्न पुछिये और जब तक समाधान नहीं हो जाता तब तक संघर्ष कीजिए, एकदिन विजय अवश्य मिलेगी और भारत की तकदीर व तस्वीर बदलेगी।

प्रश्न-1

(क) जब हम 90 से 99% बीमारियों को भारतिय योग व आयुर्वेद आदि भारतीय चिकित्सा पध्दतियो से ठीक कर सकते है तो फिर विदेशी चिकित्सा पध्दतियों की गुलामी को राष्ट्रीय चिकित्सा पध्दति के रुप मे स्वीकार्यता क्यों?

(ख) जब स्वदेशी चिकित्सा पध्दति से बी पी व थाइराइड आदि 99% बीमारियों को ठीक किया जा सकता है तो अंग्रेजी दवाओं से बीमारियों को नियन्त्रित करने के नाम पर प्रतिवर्ष 6 लाख करोड से अधिक की लूट क्यों और स्वदेशी चिकित्सा पध्दतियों का सरकारी स्तर पर तिरस्कार, अपमान, उदासीनता व उपेक्षा क्यों?

प्रश्न-2

(क) जब योग शिक्षा से देश के बच्चों एवं युवाओं को संयमी, सदाचारी, बलवान, चरित्रवान, पितृभक्त एवं राष्ट्रभक्त बनाकर नशा-वासना, हिन्सा व अपराध से बचाया जा सकता है तो फिर यौन शिक्षा की वकालत क्यों?

(ख) जब हम अपने देश के बच्चों को राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भारतीय भाषाओं- गुजराती, मराठी, बंगला, पंजाबी, उडिया, असमिया, तमिल, तेलगू, कन्नड आदि में शिक्षा देकर डाक्टर, इन्जिनियर, आइ ए एस, आई पी एस व वैज्ञानिक आदि बना सकते है तो फिर विदेशी भाषा व षड्यन्त्रकारी मैकाले की शिक्षा व्यवस्था की गुलामी क्यों? और अपने देश की भाषाओं का अपमान क्यों? भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 व 344 के अनुसार देश की भाषा मे शिक्षा, शासन व न्याय व्यवस्था को तुरन्त लागू करके देश के करोडों लोगों के साथ हो रहा अन्याय तुरन्त बन्द होना चाहिए। अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजी में काम करना हमारी मजबूरी थी। आज आजाद देश में हमें भाषा, शिक्षा, स्वास्थ व अर्थव्यवस्था आदि की विदेशी गुलामी से बाहर निकलना चाहिए और सम्पूर्ण आजादी के साथ भारत की शासन, न्याय व समस्त नीतियों को तय करना चाहिए। देश मे मात्र भाषा के कारण ही समस्त व्यवस्थाओं पर 1% लोंगो का एकाधिकार व 99% लोगों पर अन्याय क्यों?

(ग) जब एम एल ए, एम पी व मन्त्री आदि अपने बच्चों को अच्छे स्कूल, कालेज व विश्वविद्यालय में पढाते हैं और बीमार होने पर अपना व अपने परिजनों का इलाज अच्छे अस्पताल मे करवाते हैं, तो फिर देश के आम व गरीब आदमि के लिए अच्छे सरकारी स्कूल तथा अच्छे अस्पताल क्यों नहीं? ब्रिटेन, कनाडा आदि विश्व के अधिकांश सभ्य देशों में वहां के जन-प्रतिनिधि सरकारी स्कूलों में ही अपने बच्चों को पढाते हैं व सरकारी अस्पतालों मे ही इलाज करवाते हैं, अत: वहां की शिक्षा व स्वास्थ की व्यवस्थाएं बहुत ही उन्नत स्तर की हैं, तो फिर यह व्यवस्था हमारे यहाँ क्यों नहीं हो सकती? जब नेता व उच्चाधिकारी इन सरकारी संस्थानों से जुड जायेंगे तो सरकारी स्कूल व हॉस्पीटल एक दिन में ठीक हो जायेंगे और देश के आम नागरिक को शिक्षा व स्वास्थय की श्रेष्ठ व्यवस्थाएं सुलभ हो जायेंगी। एम्स जैसे सरकारी हॉस्पीटल व दिल्ली विश्वविद्यालय आदि में अच्छी

स्वास्थ व शिक्षा की सुविधाएं इसलिए हैं क्योंकि वहाँ बडे नेताओं व अधिकारियों का सीधा सम्बन्ध है।

प्रश्न-3

(क) जब स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था से देश के प्रतिवर्ष 20 से 30 लाख करोड रुपये बचाकर भारत को विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनाया जा सकता है, तो फिर वैश्विकरण व औद्योगीकरण की गलत नीतियों से देश का आर्थिक शोषण व दोहन क्यों? स्वदेशी अर्थव्यवस्था को नष्ट कर देश को गरीब, भिखमंगा, कंगाल बनाने का व लूटने का यह षड्यन्त्र क्या बन्द नहीं होना चाहिए?

प्रश्न-4

(क) जो 34,735 कानून अंग्रेजों ने अपने शासन काल में हमें लुटने, हमेशा के लिए गुलाम बनाने के लिए तथा हम पर अत्याचार व शोषण करने के लिए बनाए थे, आजादी के बाद भी उन्हीं कानूनों को लागू करके, हम पर अत्याचार तथा हमारा शोषण व लूट क्यों? तथा संविधान के अनुच्छेद 372(क) के अनुसार राष्ट्रहित मे कानून व्यवस्थाओं मे परिवर्तन क्यों नहीं?

(ख) जब अनिवार्य मतदान का कानून बनाकर देश के लोकतन्त्र को बचाया जा सकता है और लोकतन्त्र के नाम पर चल रहे भ्रष्टाचार व षड्यन्त्र को पूर्णत: समाप्त किया जा सकता है, तो फिर अनिवार्य मतदान का कानून क्यों नहीं बनाते?

(ग) यदि शराब व तम्बाकू बनाने वाली कम्पनियो पर नशा करके बीमार हुए लोगों के उपचार का खर्च वसूलने का कानून बनाकर उन पर अंकुश लगाया जा सकता है तो फिर कुछ चंद लोगों को रोजगार देने व व्यापार करके करोडपति बनाने की एवज मे लाखों लोगों को मौत के मुँह में सुलाने के षड्यन्त्र के खिलाफ कानून क्यों नहीं बनना चाहिए क्योंकि लुभावने विज्ञापन व गलत विचार देकर लोगों के मन मे क्रत्रिम भूख पैदा करके नशों की लत डालने के लिए ये कम्पनियाँ सीधी जिम्मेदार है।

(ड) पाँच तरह के अपराधीयों अर्थात भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, आतंकवादी, मिलावटखोर तथा अत्यन्त जहरीला प्रदुषण फैलाकर लाखों-करोडों देशवासियों को टी बी, केन्सर व अन्य प्राणघात बिमारियों व मौत के मुँह मे सुलाने वाले देश व देशवासियों की सुरक्षा खतरे मे डालने वाले इन लोगों को आजीवन कारावास या म्रत्युदण्ड क्यों नहीं?

(च) जब भ्रष्टाचारियों को फांसी देकर देश को लूटने से व आतंकवादियों को म्रत्युदण्ड देकर देश को आतंक से बचा सकते है, जब माँ, बहन बेटियों की इज्जत से खिलवाड करने वाले बलात्कारी व दुराचारियों को म मौत की सजा का कानून बनाकर

उनकी इज्जत को बचा सकते है तथा जहरीला प्रदुषण फैलाकर देश को बीमारियों व मौत के मुँह में सूलाने वाले लोगों के खिलाफ कानून बनाकर देश की लोगों की प्राणघात रोगों व मौत से रक्षा कर सकते हैं तो फिर इनके खिलाफ मृत्युदण्ड का प्रावधान क्यों नहीं?

तो क्या इसका मतलब यह निकाला जाये कि सरकारों व व्यवस्थाओं को चलाने वाले लोगों की नीतियाँ व नियत ठीक नहीं है और कहीं सरकार व शासन ही तो इन अपराधियों को संरक्षण नहीं दे रहें हैं?

(छ) जब मात्र 2% ट्रान्जैक्शन 'कर' (टैक्स) लगा करके देश के विकास के लिए 18 लाख 20 हजार करोड रुपये जुटाए जा सकते हैंतो फिर 64 प्रकार के गैर जरुरी कर लगाकर देश के लोगों की मेहनत की कमाई का लगभग 50% हिस्से को लूटने का षड्यन्त्र क्यों?

प्रश्न-5

(क) जब भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म व संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी सार्वभौमिक, वैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ट संस्कृति है और हमारे सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चिन्तन में कहीं भी न्यूनता व अपूर्णता नहीं है तो फिर विदेशी संस्कृति, सभ्यता की आवश्यकता व गुलामी क्यों? तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन व प्रोत्साहन के लिए प्रतिबध्दता क्यों नहीं?